

श्रीकालान्तकाष्टकम्

Shrikalantaka Ashtakam

श्रीकालान्तक अष्टकम्

कमलापतिमुभसुरवरपूजित काकोलभासितग्रीव ।
काकोदरपतिभूषण कालान्तक पाहि पार्वतीनाथ ॥१॥

कमलाभिमानवारणक्षेत्रे विमलशेमुषीदायिन ।
नतकामितङ्गलदायक कालान्तक पाहि पार्वतीनाथ ॥२॥

कडुणासागर शंभो शरणागतलोकक्षणधुरीण ।
कारण समस्तजगतां कालान्तक पाहि पार्वतीनाथ ॥३॥

प्रणतार्तिहरणक्ष प्रणवप्रतिपाद्य पर्वतावास ।
प्रणमामि तव पदाब्जे कालान्तक पाहि पार्वतीनाथ ॥४॥

मन्दारनतजनानां वृन्दारकवृन्दगेयसुयरित्र ।
मुनिपुत्रमृत्युहारिन कालान्तक पाहि पार्वतीनाथ ॥५॥

मारारण्यदवानल मायावारीन्द्रकुंभसञ्जात ।
मातङ्गयर्मवासः कालान्तक पाहि पार्वतीनाथ ॥६॥

मोहान्धकारभानो मोहितगिरिजामनःसरोजत ।
मोक्षप्रद प्रणमतां कालान्तक पाहि पार्वतीनाथ ॥७॥

विद्यानायक मह्यं विद्यां दत्त्वा निवार्य याविद्याम ।
विद्याधरादिसैवित कालान्तक पाहि पार्वतीनाथ ॥८॥

कालान्तकाष्टकमिदं पठति जनो यः कृतादरो लोके
कालान्तकप्रसादात्कालकृता भीर्न संभवेत्तस्य ॥९॥

एति कालान्तकाष्टकं संपूर्णम् ॥